International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 06-11-2021, Accepted: 22-11-2021, Published: 07-12-2021
Volume 3, Issue 4, 2021, Page No. 8-9

भारत में सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव

Preeti Nagora
Assistant Professor, Department of Geography, Govt. Arts College, Kota, Rajasthan, India

सारांश
सोशल मीडिया का प्रयोग वर्तमान में बहुत बढ़ गया है और इसके साथ ही इसका प्रभाव भी बढ़ रहा है। वर्तमान परिदृश्य में सोशल मीडिया एक ऐसा शब्द है जो काफी प्रचलित है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी शब्द साइटो और अनुप्रयोगों के रूप में वर्णन करता है जो ग्राहकों को सामग्री बनाने और पेश करने या सामाजिक प्रणाली प्रशासन में रूचि लेने के लिए सशक्त बनाता है। सोशल मीडिया लोगों को उनके मुद्दों और राय पर चर्चा करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करता है। सोशल मीडिया को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि यह इटंरनेट आधारित अनुप्रयोगों का एक एसे समूह है जो प्रयोक्ता जनित सामग्री के सृजन और आदान–प्रदान की अनुमति देता है।

मुख्य शब्दः सोशल मीडिया, सामाजिक प्रणाली, इंटरनेट, ग्राहक, अनुप्रयोग

प्रस्तावना

सर्वप्रथम हमें सोशल मीडिया के बारे में जान लेना चाहिए कि सोशल मीडिया क्या है। यह लोगों को उनके मुद्दों एवं राय पर चर्चा करने के लिए एक मंच उपलब्ध करवाता है। सोशल मीडिया कम्प्यूटर। मोबाइल, लैपटॉप, टेबलेट उपकरण है जो लोगों को किसी विशेष नेटवर्क के माध्यम से सूचना, छवियों, विचारों और यहाँ तक कि एक–दूसरे के साथ आदान–प्रदान या साझा करने की अनुमति देते है। सोशल मीडिया को इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं के आधार पर परखना उचित रहेगा। इसमें व्यवसाय, शिक्षा व्यापार, युवा, समाज जैसे विशेष क्षेत्रों पर फोकस रहा है। इस अध्ययन के दौरान हम बताते हैं कि इस सोशल मीडिया का वर्तमान पीढ़ी एवं समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा। जैसे–जैसे तकनीक बढ़ रही है, यह प्रत्येक व्यक्ति की दिनचर्या का हिस्सा बन गया है।

सोशल मीडिया का प्रयोग वर्तमान में बहुत बढ़ गया है और इसके साथ ही इसका प्रभाव भी बढ़ रहा है। वर्तमान परिदृश्य में सोशल मीडिया एक ऐसा शब्द है जो काफी प्रचलित है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी शब्द 'साइटो और अनुप्रयोगों के रूप में वर्णन करता है जो ग्राहकों को सामग्री बनाने और पेश करने या सामाजिक प्रणाली प्रशासन में रूचि लेने के लिए सशक्त बनाता है। सोशल मीडिया लोगों को उनके मुद्दों और राय पर चर्चा करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करता है। सोशल मीडिया को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि यह इंटरनेट आधारित अनुप्रयोगों का एक ऐसा समूह है जो प्रयोक्ताजनित सामग्री के सृजन और आदान–प्रदान की अनुमति देता है।

सोशल मीडिया संगठनों, समुदायों और व्यक्तियों के बीच संसार में महत्त्वपूर्ण और व्यापक परिवर्तनों को अंजाम देता है। सोशल मीडिया तेजी से आगे बढ़ रहा है, दुनिया भर के व्यक्तियों के लिए नए और महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण पेश कर रहा है। वर्तमान में सोशल मीडिया हमारे दैनिक जीवन का एक अनिवार्य अंग है। 2000 के दशक के शुरु में सॉफ्टवेयर विकासकर्ताओं ने अंतिम उपभोक्ताओं को इस बात में सक्षम बनाया कि वे वर्ल्डवाइड वेब पर स्थित निष्क्रिय पृष्ठों को देखने के बजाय अधिक सक्रिय बन सके तथा ऑनलाइन या वास्तविक उपयोग कर्ताओं में प्रयोक्ताजनित सामग्री का उपयोग एवं इस्तेमाल कर सकें। इसके परिणाम स्वरूप वेब 2.0 के रूप में हुई और इससे एक अद्भुत प्रयोग का सृजन हुआ जिसे आज हम सोशल मीडिया कहते है।

सच है कि सोशल मीडिया ने इंटरनेट का लोकतंत्रीकरण किया है और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह कि इसने भाषण एवं अभिव्यक्ति के आदर्शों को संरक्षित एवं सुरक्षित किया है।

सोशल मीडिया मूलतः कम्प्यूटर या मानव संचार या जानकारी के आदान प्रदान करने से जुड़ा है। आज के समय में सोशल मीडिया संचार का सबसे बड़ा माध्यम बन गया है। यह एक ऐसा सामाजिक पटल है, जो समाज में विचारों, सूचनाओं और समाचार इत्यादि को एक दूसरे से साझा करने में सक्षम है। सोशल मीडिया एक अपरंपरागत मीडिया है। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे इंटरनेट के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। यह एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। विश्वभर में सूचनाओं का आदान प्रदान 'एक क्लिक' के माध्यम से क्षण भर में संभव है। यह एक ऐसा मीडिया है, जो प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और समानान्तर मीडिया से अलग है। इसके अनेक साधन हैं जैसे–फेसबुक, वॉहट्सअप, इंस्टाग्राम, ट्विटर आदि। सोशल मीडिया का महत्व इस बात से पता चलता है कि इसके भारत में वर्ष 2019 तक 574 मिलियन सक्रिय उपयोगकर्ता थे। इंटरनेट प्रयोग में चीन के बाद भारत दूसरे स्थान पर है। एक अनुमान के अनुसार, दिसंबर 2020 तक भारत में लगभग 639 मिलियन सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ता होंगे। भारत के अधिकांश इंटरनेट, उपयोगकर्ता मोबाइल फोन इंटरनेट उपयोगकर्ता है। वर्ष 2019 को भारत में कुल डेटा ट्रैफिक में 47: की वृद्धि हुई है। देश भर में खपत होने वाले कुल डेटा ट्रेफिक में 49 की भागीदारी 96: है जबकि 39 डेटा ट्रेफिक में 30: की उच्चतम गिरावट दर्ज की गई है। सोशल मीडिया बहुत तेजी के साथ सूचनाओं का आदान–प्रदान करता है। यह एक संचार का सरल और सुगम माध्यम है जो कि सभी वर्गों के लिए है, जैसे कि शिक्षित वर्ग हो या अशिक्षित वर्ग। यह फोटो, वीडियो, सूचना, डॉक्यूमेंटस आदि को आसानी से शेयर करता है।

सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव व्यापक है। भारत समेत विश्वभर में अरबों लोगों ने सूचना को संरक्षित रखने और इसके प्रसार में लगे हुए पारंपरिक माध्यमों को चलन से लगभग बाहर कर दिया है। यह अब एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जो कि नई योग्यता वाली संभावनाओं को

विश्व पटल पर मुखर होने के अवसर प्रदान करता है। यह दूसरे संचार के साधनों की तुलना में सस्ता और आसान है। यह सूचनाओं का वैश्विक स्तर पर साझा करता है जो कि स्वतः ही वसुधैवकुटुम्बकम् की परिकल्पना को गति प्रदान करती है। जिस प्रकार सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार सोशल मीडिया भी नकारात्मक और सकारात्मक पहलू लिए हुए है। इसका समाज पर प्रभाव राजनीतिक क्षेत्र में, वाणिज्य पर, पारिवारिक ढाँचें पर, शिक्षा पर, व्यवसाय इत्यादि पर बुनियादी साबित हो रहा है। सोशल मीडिया का राजनीति पर प्रभाव इस उदाहरण से जाना जा सकता है कि, 2014 का लोकसभा चुना, सोशल मीडिया के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा जीता गया। राजनैतिक पटल पर सोशल मीडिया भारत में ही नहीं, संयुक्त राज्य अमरीका में डोनाल्ड ट्रम्प की सरकार को बहुत दिलवाने का साक्षी बना। सोशल मीडिया विचारों को वाणी प्रदान करता है। वह सीमांत विचारों को एक माध्यम प्रदान करता है जो मुख्यधारा से टूट चुके थे। इसका दूसरा पहलू यह है कि, यह स्लैक्टिविजम को बढ़ावा देता है। हांलाकि सोशल मीडिया सक्रियता सामाजिक मुद्दों के बारे में बढ़ती जागरुकता लाती है, लेकिन सवाल यह है कि क्या यह जागरुकता वास्तविक परिवर्तन में बदल रही है। कुछ लोगों का तर्क है कि सामाजिक साझाकरण ने लोगों को कम्प्यूटर और मोबाईल फोन का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया है ताकि सामाजिक मुद्दों पर अपनी चिन्ताओं को व्यक्त करने के लिए वास्तव में वास्तविक जीवन में अभियानों के साथ जुड़ सकें। उनका समर्थन 'लाइक' बटन दबाने तक सीमित है। यह एक मानवीय प्रतिक्रिया है जब लोगों को विकल्प दिए जाते हैं जो उन्हें कार्य करने की जिम्मेदारी से अनुपस्थित करते हैं। ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय के सऊदर स्कूल ऑफ बिजनेस द्वारा 2013 के एक अध्ययन में पाया गया कि जब लोगों को एक सामाजिक कारण 'पसंद' के विकल्प के साथ प्रस्तुत किया जाता है, तो वे इसका उपयोग वास्तव में एक धर्मार्थ कारण के लिए समय और धन से बाहर निकलने के लिए करते हैं। दूसरी ओर, जब लोगों को निजी में समर्थन दिखाने की अनुमति होती है, तो उन्हें वित्तीय योगदान देने के मामले में सार्थक समर्थन दिखाने की अधिक संभावना होती है। व्यवसाय में सोशल मीडिया के दखल की बात करने पर यह समझने योग्य बिन्दु है कि कार्यस्थल में पूरी तरह से सामाजिक प्रौद्योगिकियों को लागू करने से सीमाओं को हटा दिया जाता है, सिलोस को समाप्त कर दिया जाता है और बातचीत को बढ़ा सकता है और अधिक कुशल और जानकर श्रमिकों को बनाने में मदद कर सकता है। अर्थात् विश्वभर अब ई–कॉमर्स के प्रभाव में है। परन्तु ई–कॉमर्स सामाजिक विश्वसनीयता को नष्ट कर सकती है। सोशल मीडिया का शिक्षा पर प्रभाव अकल्पनीय है। ब्लॉग, विकी, लिंक्डइन, ट्विटर, फेसबुक और पॉडकास्ट अब कई शैक्षणिक संस्थानों में सीखने के लिए आम उपकरण है। सोशल मीडिया से ऑनलाइन स्ट्डीज को बढ़ावा दिया है परन्तु इसके दुष्प्रभाव भी देखने को मिले हैं। जहाँ शिक्षार्थियों के बीच गोपनीयता की कमी के मुद्दे सामने आए हैं। सोशल मीडिया ने कई चुनौतियों को भी जन्म दिया है। जैसे कि द्वेषपूर्ण भाषण, अफवाहें, साइबर धमकी फेक न्यूज, ऑनलाइन ट्रोलिंग, महिला सुरक्षा। ये सभी चुनौतियाँ समाज में व्याप्त सुरक्षा के भाव को समाप्त करती हुई हिंसा, जान माल के नुकसान को बढ़ावा देती है। वर्ष 2019 माइक्रोसॉफ्ट द्वारा 22 देशों में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार 64: से अधिक भारतीय फर्जी खबरों का सामना करते हैं। महिलाओं की सुरक्षा इस सोशल मीडिया नामक पटल ने तार–तार कर दी है महिलाओं को साइबर रेप आदि का खतरा बना रहता है जो कि हमारे भारतीय समाज की आधारशिला को भंग करता है परन्तु इसके सकारात्मक प्रयोग जो कि नवीन अवसरों, व्यापक विस्तार, अंतहीन दूरी को तय करती हुई परिलक्षित होती है। आम व्यक्ति भी सरकार और सरकारी सेवाओं का सीधे तौर पर लाभ उठा सकता है। वह अपनी समस्याएँ सरकारी पोर्टल पर साझा कर सकता है जिसके द्वारा हमारा लोकतंत्र मजबूत और जावाबदेह शासन प्रणाली को प्रमाणित करता है। आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स की सहायता से स्वचालित फिल्टर मानव सामग्री को व्यवस्थित करेगा। ये ।1 इकाईयाँ स्वचालित रूप से किसी छवि या समाचार को साझा करने पर हर बार गलत रिपोर्टिंग के खतरे को भांप लेगी तथा फलस्वरूप कार्य करेगी। सोशल मीडिया को विनियमित करने हेतु एक संपूर्ण राष्ट्रीय कानून की प्रबल आवश्यकता है तथा लोगों को मुख्यतः युवाओं को डिजिटल साक्षर बनाया जाए। जिसके फलस्वरूप इसके नकारात्मक प्रभाव को नियंत्रित किया जा सके।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया ने हमारे देश के युवाओं को पूर्णतः प्रभावित किया है। तकनीक मानव के उत्थान के लिए बनाई गई थी परन्तु तकनीक जब सामाजिक ढांचे, मूल्यों पर कुठाराघात करे, तब, समाज को नियमों, विनियमन की आवश्यकता होती है जो, की इस संचार के सुगम माध्यम की रचनात्मकता को बनाए रखे और इसके द्वारा समाज को लाभान्वित करे।

संदर्भ सूची

1. श्रीनिवास एम.एन. सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया
2. रिवलनानी, सुनील, 2002 'द आइडिया ऑफ इंडिया', पेंगविन बुक्स, नयी दिल्ली
3. http/www.indianwire.com
4. आर्या एना (2011) 'सामाजिक मीडिया'। अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. बरमेजो, एफा (2009): ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में दर्शकों का निर्माण : प्रसारण से गूगल तक न्यू मीडिया और सोसाइटी
6. शिक्षा में मुद्दे और विचार, 1, 43–50
7. कृषि एवं ग्रामीण पत्रकारिता (2010) – डॉ. नरेश गौतम, पृ.सं. –978–81–7445–541–3.
8. आधुनिक पत्रकारिता के विविध आयाम (2010)– नीरज वर्मा, पृ.सं. –978–81–7445–549–9
9. जनसंचार एवं समाज (2005) – डॉ. मोनिका नागोरी पृ.सं. –81–86064–47–8 10.
10. चौथीसत्ता डॉट ब्लोगस्पॉट
11. चरचाये ए खास डॉट ब्लोगस्पॉट
12. डब्ल्यू डब्ल्यू डबल्यू उदयइंडिया डॉट इन
13. वानीहिन्दी डॉट ब्लोगस्पॉट डॉट इन